

अनजानी दुनिया में अपने-6

“ इस कहानी के अंतिम भाग में पढ़ें कि कैसे दिव्या की माँ ने दिव्या और मेरी सुहागरात की तैयारी की और हम दोनों ने अपनी सुहागरात मनाई. ... ”

Story By: (jordan17jatt)

Posted: Sunday, October 7th, 2018

Categories: [इंडियन बीवी की चुदाई](#)

Online version: [अनजानी दुनिया में अपने-6](#)

अनजानी दुनिया में अपने-6

दोस्तो, अन्तर्वासना के सभी पाठकों को जॉर्डन का प्यार भरा नमस्कार !

प्रस्तुत है मेरी कहानी अनजानी दुनिया में अपने का अगला और अन्तिम भाग। दोस्तो, आप लोगों ने मेरी कहानी को पसंद किया, उसके लिए धन्यवाद। मेरी लाइफ बहुत बिजी है इसलिए मैं कहानी लिखने हेतु वक़्त कम निकाल पाता हूँ तो ज्यादा लम्बी कहानी नहीं लिख पाता, उसके लिए तहे दिल से माफी दें।

इस प्यार भारी कहानी के पिछले भाग

[अनजानी दुनिया में अपने-5](#)

में आपने पढ़ा कि मैंने अपने खून से कामिनी के सामने उसकी बेटी दिव्या की मांग भर कर शादी कर ली थी.

दिव्या भी बहुत खुश थी, मैंने दिव्या की आँखों में देखा तो वो भी बहुत प्यार से मेरी आँखों में देखने लगी, कुछ देर बाद वह शरमा गयी और दोनों हाथों के बीच अपने मुँह को छुपा लिया। शायद उसे इस बात का अहसास हो चला था कि आज उसकी सुहागरात है।

मैंने नहा लेना उचित समझा, जब मैं नहा कर वापस आया तो देखा कि कामिनी दिव्या को लेकर कमरे में जा चुकी थी।

कामिनी ने कमरे से बाहर निकलते हुए, मुझे अंदर जाने का इशारा किया और खुद बाहर आ गयी, साथ ही उसने दरवाजा बाहर से बंद कर दिया।

अब आगे :

कमरा बंद होते ही सामने देखा तो दिव्या लाल साड़ी में घूंघट डाले बैठी थी, मैं उसके पास गया, सारा कमरा गुलाबों से महक रहा था, लेकिन दिव्या के पास गया तो उसमें से आ रही सेंट की खुशबू मुझे ज्यादा मदहोश कर रही थी।

आज बहुत खुश था मैं ... क्योंकि मेरी रानी आज मेरे सामने थी, धीरे से उसका घूंघट ऊपर उठाया तो उसने मेरी तरफ देखा फिर शरमा के नजरें नीची कर ली, सच में उसकी माँ ने उसे बहुत अच्छे से सजाया था, मैंने अपने चेहरा उसके पास लेजाकर उसके एक गाल को अपने होंठों के बीच दबा लिया और आँखें बंद करके उसे चूसने लगा।

अचानक दिव्या मेरे सीने से लग गई, उसकी साँसें बहुत तेज चल रही थी.

मैंने उससे पूछा- दिव्या, तुम खुश हो ना ?

उसने नजरें उठा कर मेरी आँखों में देखा और बोली- आप खुश हैं ना ?

मैंने पलकें झपका कर हाँ में उत्तर दिया तो वो फिर मेरे सीने से लग गयी.

फिर उसे मैंने लेटा दिया, मैं भी एक कंधे पर उसके पास लेटते हुए अपने होंठ उसके होंठों के पास ले गया, आज उसके होंठ मुझे बहुत हसीन लग रहे थे, ऊपर से लाल लिपस्टिक उसे गुलाब की पंखुड़ी होने का अहसास दिला रहे थे।

धड़कते दिल से मेरे होंठ जैसे ही उसके होंठों के पास आये तो मैंने उसकी साँसों को महसूस किया, उसकी आँखें बंद हो चुकी थी, हमारे होंठ आपस में मिल चुके थे, धीरे धीरे मैंने उन्हें चूसना शुरू किया, कभी ऊपर वाला कभी नीचे वाला तो कभी दोनों को एक साथ चूसने लगा, दिव्या अनाड़ी की तरह बीच बीच में मेरे होंठ को अपने दोनों होंठों के बीच दबा रही थी।

अब मेरे हाथ फिसलते हुए उसकी कमर को छू रहे थे, मैं उसके पेट पर हाथ फिराने लगा, बहुत चिकना और सपाट पेट था, जब मेरा हाथ उसकी नाभि के नीचे जाता तब उसका

शरीर कांपने लगता और वो हम्म हम्म करने लगती। मैं उसके होंठों को चूसता जा रहा था, अब होंठों पर मेरी पकड़ मजबूत हो चली थी।

लगभग 5 मिनट तक लिप-किस करने के बाद मैंने उसके कान के नीचे वाले हिस्से पर चुम्बन किया, तो झट से मेरे गले लग गई।

फिर मैंने उसके गले पर किस करना शुरू किया, अब मेरा एक हाथ उसके वक्ष पर आ चुका था, ब्लाउज के ऊपर से ही मैं उसे दबाने लगा, दिव्या के मम्मे ज्यादा बड़े तो नहीं लेकिन अच्छे आकार के थे. अब दिव्या के मुख से भी सिसकारियां निकलने लगी थी।

एक हाथ से अब मैं ब्लाउज के हुक खोलने लगा, सब हुक खोलने के बाद मैंने ब्लाउज को हटाने की कोशिश की, तो दिव्या ने उठ कर उसे निकालने में मेरी मदद की। उसने वही ब्रा पहनी थी जो मैंने पसन्द की थी, मैंने उसके क्लीवेज पर किस किया, फिर ब्रा की साइड वाली पट्टियों को कंधे से नीचे उतार दिया तो दिव्या के नग्न उरोज मेरे सामने आ गए. आह... इतने मुलायम और चिकने मम्मे मैंने कभी नहीं देखे थे, मैं तो बस पागल हो गया और टूट पड़ा दोनों मम्मों पर!

उधर दिव्या की सिसकारियां पूरे कमरे में गूंज रही थी।

एक हाथ से मैं दिव्या की साड़ी खींचने लगा और उसे उसके बदन से अलग कर दिया. उसके बाद मैंने पेटिकोट का नाड़ा खींच कर खोल दिया और उसे नीचे खिसका दिया, इस दौरान मेरे हाथ उसकी जांघों से टकराये तो लगा कि शायद उसकी मां ने उसके पूरे शरीर की वैक्सिंग कर दी थी.

अब मुझसे कंट्रोल नहीं हो रहा था, मम्मों को छोड़ अब मैं उसके पेट को चाटने लगा। फिर जांघों को चाटना और चूमना शुरू किया, दिव्या ने सफेद रंग की छोटी से वी शेप पेन्टी

पहन रखी थी, जिसका जांघों के पास वाला भाग गीला हो रहा था।

सच में दोस्तो, उसकी चिकनी टांगें चाटने का मजा ही अलग था, कुछ देर बाद जांघें चाटना छोड़ कर अपने दोनों हाथों से उसकी पैंटी हटाना शुरू किया तो दिव्या ने कमर उठा कर मेरी मदद कर दी। उफफफ... आह...हम्मम शानदार... इतनी सुंदर चूत मैंने पहली बार देखी थी, उसकी तारीफ में शब्द कम पड़ जाएं इतनी सुंदर चूत थी। चूत के बाल साफ़ किये हुए होने से बिल्कुल चमक रही थी चूत।

दोस्तो, दिव्या की चूत के बारे में आपको बता दूं, उसकी चूत ऊपर की और उठी हुई थी साथ ही वो चूत का उठाव इतना शानदार था कि किसी नपुंसक का लन्ड खड़ा हो जाये। नीचे की ओर आये तो उस उठाव के बीच के हिस्से से शुरू होते हुए दो गुलाबी पत्तियां हल्की सी गोलाई लेते हुए नीचे वापिस मिल चुकी थी, ये गुलाबी पत्तियां मुश्किल से एक इंच की दूरी में थी, मुझे यह अंदाजा तो हो गया था कि इस लड़की को पहली बार दर्द तो बहुत होगा।

मैंने अपने हाथ से उसकी चूत की दोनों पत्तियों को अलग किया तो दिव्या सीत्कार कर उठी, उसकी चूत का छेद भी बहुत छोटा था। मुझसे रुका नहीं गया और मैंने दोनों फांकों के बीच अपनी जीभ रख दी, दिव्या मारे उत्तेजना के धनुष की तरह तन गयी बीच से। उसकी चूत के छेद की खुशबू इतनी मस्त थी कि दुनिया की सब सुगंध उसके आगे फेल हो जाये।

मैं उसकी चूत को अपनी जीभ से लपर लपर चाटने लगा। बीच बीच में उसके दाने को भी अंगूठे से सहला देता तो उसकी तड़प और बढ़ जाती।

अब उसकी सिसकारियां कराह में बदल गयी थी- ओह जॉर्डन... आह जॉर्डन... कुछ हो रहा है मुझे, कुछ ही रहा है मुझे!

इसके साथ ही उसके शरीर ने साथ छोड़ दिया और वह स्वलित हो गयी, उसकी साँसें उखड़ रही थी, मैंने उसका रस चाट लिया। अब वह शान्त पड़ चुकी थी, मैंने भी उठ कर अपने कपड़े उतार दिए, साथ ही उसके उसकी ब्रा भी पूरी तरह निकाल दी।

मेरा लन्ड पूरी तरह तन चुका था, यह देखकर दिव्या बोली- यह तो बहुत बड़ा होता है, मैं मर जाऊंगी इससे।

मैंने समझाया- देखो एक बार दर्द होगा, लेकिन अपने प्यार के लिए तुम इतना सहन कर लेना, वरना अपना प्यार अधूरा रह जायेगा।

यह सुनकर दिव्या ने हिम्मत बटोरकर हामी भर दी, मैंने भी उसे अपने ऊपर लिटा लिया, फिर से उसके होंठ चूसने लगा, साथ दोनों हाथ पीछे ले जाकर उसकी गांड को सहलाने लगा। हम दोनों ने फिर से लगभग 5 मिनट लंबा किस किया।

अब मैंने दिव्या को घोड़ी की तरह होने को बोला तो वो बन गयी, अब मैं नीचे लेटकर अपना मुंह इस तरह उसकी जांघों के बीच रखा कि उसकी चूत मेरे मुंह तक पहुंच जाए, फिर उसके पैर चौड़े करके उसकी चूत को अपने मुंह पर टिका लिया और फिर से चपर चपर चूत चाटना शुरू कर दिया।

थोड़ी देर बाद दिव्या की चूत का दबाव मेरे मुंह पर बढ़ने लगा और उसकी सिसकारियां भी बढ़ गयी।

मैंने देर न करते हुए उसे अपने ऊपर से हटाया और उसे लेटा दिया, उसके दोनों पैरों को चौड़ा कर दिया, मैं अपने लन्ड को उसकी चूत पर घिसने लगा, हालांकि मेरे लिए भी रुकना मुश्किल होता जा रहा था।

अब दिव्या अपनी चूत ऊपर उठाने लगी, मैंने ज्यादा देर न करते हुए अपने लन्ड पर थोड़ा थूक लगा कर चिकना किया और दिव्या के होंठों को अपने होंठों में दबाकर लन्ड उसकी

चूत के छेद पर टिका दिया।

अब हल्के हल्के लन्ड का दबाव डालने लगा, लेकिन लन्ड अंदर नहीं जा रहा था, मैंने फिर से थोड़ा थूक लगाया, फिर से छेद पर टिका दिया, मैंने हल्का सा जोर लगाने की सोची, वरना मैं वहीं स्वलित हो जाता. मैंने थोड़ा सा झटका मारा तो लन्ड उसकी चूत के छेद में अटक गया और साथ ही अटक गई दिव्या की साँसें भी। वो गुं गुं करने लगी क्योंकि उसके होंठ मेरे होंठों के बीच थे।

कुछ देर बाद मैंने फिर से एक झटका मारा तो उसकी आंखें चढ़ गई, मेरा सारा जोश हवा हो गया, लेकिन मैंने मैदान नहीं छोड़ा, लन्ड उसकी चूत में फँस गया था। मैंने धीरे से लन्ड बाहर निकाला और फिर से चिकना करके वापिस थोड़ा सा अंदर डाल दिया, कुछ देर बाद जब मुझे लगा कि अब सब ठीक है तब वापिस मैंने एक झटका मारा और आधे से ज्यादा लन्ड चूत में चला गया उसकी तेज चीख मेरे होंठों के बीच दब कर रह गई।

शायद उसकी योनि की झिल्ली फट गयी थी ; दिव्या एकदम से बेहोश सी हो गयी थी, मैं उसी हालत में लन्ड फँसाये पड़ा रहा कुछ देर!

थोड़ी देर बाद दिव्या अपने हाथों से मेरी पीठ सहलाने लगी तो मैंने भी लन्ड को थोड़ा थोड़ा आगे पीछे करना शुरू किया, यकीन मानो दोस्तो ... चुत इतनी टाइट थी कि लन्ड को आगे पीछे करने में भी मशक्कत करनी पड़ रही थी.

6-7 मिनट तक धीरे धीरे झटके मारने के बाद लन्ड अपनी जगह बना चुका था तो अब आसानी हो रही थी, इसलिए मैंने लन्ड की स्पीड बढ़ा दी, दिव्या की आंखों में आँसू टपक पड़े तो मैं रुक गया और उसके मम्मो की निप्पल को होंठों से चाटने लगा, बीच बीच में मम्मा चूस भी लेता। अब दिव्या के दर्द की कराहें सिसकारियों में बदल गयी थी, अब मैंने धक्के मारना फिर से शुरू कर दिया।

धीरे धीरे मैं स्पीड बढ़ाने लगा तो दिव्या मुझे बांहों में कसकर हर जगह से चूमने लगी।

फिर थोड़ी देर बाद आह आह आह आह की आवाजें उसके मुंह से आने लगी। उसने मेरे होंठ अपने होंठों के बीच दबा लिए थे और उन्हें इतनी जोर से चूस लिया कि एक बार तो खून निकल गया था।

अब मेरे धक्कों की स्पीड फुल थी, अब दिव्या भी मुझे काटने लगी थी मतलब उसका भी स्खलन पास में ही था, अचानक उसने अपने दांतों से मेरे छाती पर काट लिया, मेरी चीख निकल गयी लेकिन वो आओह आओह आओह करते हुए झड़ गयी और उसके थोड़ी देर बाद ही मेरी लन्ड ने भी अपना लावा उगल दिया।

हम दोनों की सांसों को कण्ट्रोल होने में लगभग 4-5 मिनट लग गए। लेकिन आज जैसी संतुष्टि मुझे कभी नहीं मिली थी। आँखें खोल कर देखा तो सारी बेडशीट बीच से लाल हो गई थी। लोग तो कहते हैं कि थोड़ा सा खून निकलता है लेकिन यह तो बहुत ज्यादा था।

थोड़ी देर बाद फिर से लन्ड ने सर उठाया तो मैंने दिव्या का हाथ लन्ड पर रख दिया। दिव्या ने कुछ देर लन्ड सहलाया अपने हाथों से, फिर अपने मुंह की ओर ले जाने लगी, वो किसी अनाड़ी की तरह लन्ड को मुंह में लेकर चूस रही थी लेकिन उसके चूसने में मुझे बहुत मजा आ रहा था।

उस रात हमने 3 बार चुदाई की और तीसरी बार तो लगभग 30 मिनट तक चुदाई की। फिर हम सो गए।

सुबह मैं देर तक सोता रहा, जब उठा तब तक वे दोनों उठ चुकी थी। दिव्या को बुखार थी, लेकिन वो शाम होते होते ठीक हो गयी।

दोस्तो, अब हम तीनों बहुत खुश थे, मैंने अपना ट्रांसफर इंदौर करवा लिया, हम तीनों इंदौर में ही रहने लगे, थोड़ी जुगाड़ लगाकर हम तीनों का इंदौर का ही राशन कार्ड बनवा

लिया, फिर दिव्या को ओपन यूनिवर्सिटी से 12वीं करवाई, अब वह वकालत को पढ़ाई कर रही है.

कामिनी को भी मैंने लोन लेकर एक छोटा सा ब्यूटी पॉर्लर खुलवा दिया।

दिव्या के चाचा के बारे में कुछ जानकारी निकाली तो पता चला उसका लड़का सड़क दुर्घटना में मारा गया और उसकी बीवी को कैंसर था। दिव्या सही वक्त और उसकी वकालत की पढ़ाई पूरी होने का इंतजार कर रही है। बाकी हम तीनों खुश हैं।

दोस्तो, इस कहानी को मैं यहीं समाप्त कर रहा हूँ, उम्मीद है आपको मेरी कहानी पसन्द आयी होगी। अपने सुझाव, शिकायते, प्यार मुझे मेल करते रहें।

मेरा मेल आई डी jordan17jatt@gmail.com है।

शुक्रिया।

